

उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं शहरी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन

निधि कुमारी

शोध छात्रा, शिक्षाषास्त्र, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ० प्र०

प्रस्तावना

षिक्षा के द्वारा व्यक्ति के सामान्य ज्ञान, जीवन स्तर, स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं नवपरिवर्तन के प्रति प्रेरणा विकसित किया जा सकता है। षिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने व्यक्तिव का सर्वांगीण विकास करते हुए समाज एवं राष्ट्र के विकास में सहायक होता है।

माध्यमिक स्तर की षिक्षा प्राथमिक स्तर की षिक्षा एवं उच्च स्तर की षिक्षा के बीच की कड़ी है। माध्यमिक षिक्षा जीवन यापन एवं नेतृत्व का गुण प्रदान करती है। माध्यमिक षिक्षा बालक की मानसिक प्रवृत्तियों तथा विचारधारा में परिपक्वता लाती है। माध्यमिक स्तर की षिक्षा को परिवर्तन काल की षिक्षा कहा जाता है क्योंकि यही वह काल है जिसमें बालक में व्यावसायिक क्षेत्र से जुड़े अनेक निर्णय लेने होते हैं यदि बालक में इस स्तर पर निर्णय लेने की योग्यता नहीं पायी जाती है तो बालक में मानसिक तनाव उत्पन्न हो जाता है जो बालक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

मानसिक रूप से स्वस्थ्य रहना प्रत्येक विद्यार्थी का एक गुण है क्योंकि यह गुण भविष्य में विकास की नीव का कार्य करता है जिस प्रकार एक कमज़ोर नीव भवन का बोझ नहीं उठा संता उसी प्रकार कमज़ोर या जिसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है वह व्यक्ति विकास नहीं कर सकता। जिस विद्यार्थी में स्वयं को जितना अधिक परिस्थितियों को ढालने की क्षमता होती है वह व्यक्ति उतना ही मानसिक रूप से स्वस्थ्य होता है।

उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं शहरी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।

परिकल्पना

- उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं शहरी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत अध्ययन में षोध विधि के रूप में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है न्यायदर्श के चयन में प्रयागराज जनपद में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 50 एवं 50 छात्राओं का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया गया है। सांख्यिकी विधियों में मध्यमान मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी मूल्य सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की सीमाएं

- प्रस्तुत षोध उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
- प्रस्तुत षोध प्रयागराज जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण, विष्लेपण एवं व्याख्या

1—उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं शहरी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है –

सारणी संख्या—1.0

उच्च माध्यमिक स्तर के 'षहरी छात्र एवं षहरी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—अनुपात

समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	df	C.R	सारणी मान
षहरी छात्र	50	151.7	16.31	3.3	98	.90	$t=.05=1.98$
षहरी छात्राएँ	50	148.7	16.74				$T=.01=2.63$
निष्कर्ष	शून्य परिकल्पना —1.....दोनों स्तरों पर स्वीकृत						

*df (.05) तथा (.01) पर सार्थक

सारणी 1.0 के परिणाम से पुष्टि होती है कि df 98 पर df (.05) तथा (.01) पर सार्थकता स्तरों के सारणी मान 1.98 तथा 2.63 से कम है अतः मध्यमानों में अन्तर दोनों स्तरों .05 तथा .01 पर असार्थक है अतः शून्य परिकल्पना ‘उच्च माध्यमिक स्तर के बहरी छात्र एवं बहरी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है’ को स्वीकार किया जाता है ।

2—उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है –

सारणी संख्या—1.1 उच्च माध्यमिक स्तर के ‘ग्रामीण छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—अनुपात

समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	df	C.R	सारणी मान
ग्रामीण छात्र	50	140.9	15.07				t=.05=1.98
ग्रामीण छात्राएँ	50	134.1	16.73	3.3	98	2.13	T=.01=2.63
निष्कर्ष	शून्य परिकल्पना—2दोनों स्तरों पर स्वीकृत						

*df (.05) तथा (.01) पर सार्थक

सारणी 1.1 के परिणाम से पुष्टि होती है कि C.R=2.13 का मान df 98 पर (.05) तथा (.01) पर सार्थकता स्तरों के सारणी मान 1.98 तथा 2.63 से कम है अतः मध्यमानों में अन्तर दोनों स्तरों .05 तथा .01 पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना—2 ‘उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है’ स्वीकार किया जाता है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- आने डब्ल्यू रिले 2008, मेंटल हेल्थ ऑफ चिल्डन, कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी
- सिह और कुमार 2005, शिक्षा मनोविज्ञान, पटना भारती भवन, पटना
- कपिल, एच. के. 1996 अनुसंधान विधियाँ, प्रिन्ट्स पैलेस, आगरा—04